



केला

मूल विवरण

- यह भी ज्ञान के पेड़ के रूप में जाना जाता है/स्वर्ग के पेड़/कल्पतरू (पुण्य का पौधा)/स्वर्ग के सेब ($2n = 33$)
- मूल - दक्षिण पूर्व एशिया (इंडो-मलयान)
- फल प्रकार: बेरी
- इनफ्लोरेसेंस: स्पडिक्स
- डे न्यूट्रल प्लांट
- जल प्रेमी संयंत्र
- केले के पत्ते को जैविक थाली माना जाता है।
- खाद्य केले वनस्पति पार्थेनोकैर्पी द्वारा विकसित किए जाते हैं।
- केले में बहुत सारे औषधीय गुण होते हैं और इसका उपयोग अल्सर, जोड़ों के दर्द जैसे स्वास्थ्य विकारों के इलाज के लिए किया जाता है,

जलवायु की स्थिति

उष्णकटिबंधीय फसल होने के नाते, केले को गर्म, आर्द्र और बरसात की जलवायु की आवश्यकता होती है।

इष्टतम तापमान सीमा 10 से 40°C है और सापेक्ष आर्द्रता 90% या उससे अधिक है।

यह ठंड के लिए अतिसंवेदनशील है और शुष्क परिस्थितियों को बर्दाश्त नहीं कर सकता। तेज हवाओं के कारण पौधे के विकास और फलों की उपज और गुणवत्ता में काफी कमी आती है।

यह एमएसएल से 1200 मीटर-1500 मीटर की ऊंचाई तक उगाया जाता है।

उच्च हवा का वेग 80km/hr से अधिक है। (4m/sec) फसल को भारी नुकसान का कारण बना।

जीवन चक्र

बौना केले लगाने के बाद 11-14 महीने के भीतर फसल के लिए तैयार हो जाते हैं।

लंबा केले लगाने के बाद 14-16 महीने के भीतर फसल के लिए तैयार हो जाते हैं।

शूटिंग के समय के लिए रोपण: 7 से 9 महीने

फसल के लिए शूटिंग: 90 से 120 दिन

क्षेत्र और उत्पादन:

- केले के उत्पादन में भारत अग्रणी देश है।
- भारत में उगाई जाने वाली फल फसलों में कुल क्षेत्रफल: 20%



- कुल उत्पादन: कुल फल उत्पादन का 32%।
- क्षेत्र - केएन एंड जीटी, टीएन एंड जीटी; एपी
- उत्पादन - जीजे और जीटी; एपी और टीएन
- उत्पादकता- एमपी एंड जीटी; जीजे
- निर्यात: संयुक्त अरब अमीरात और ईरान और सऊदी अरब

पानी की जरूरत

पानी की आवश्यकता -1800-2500 मिमी/वर्ष

पोषक ों

- नमी -70.1%
- प्रोटीन -1.2%
- फैट -0.3%
- कार्बोहाइड्रेट -27.2%
- कैलोरी -67 -137 k Cal/100gm

पसंदीदा मिट्टी

- मिट्टी गहराई में 1 मीटर, उपजाऊ और अच्छा कार्बनिक पदार्थ होने चाहिए
- जलोढ़ और ज्वालामुखी मिट्टी सबसे अच्छा कर रहे हैं।
- खारा ठोस, कैल्केरस मिट्टी केले की खेती के लिए उपयुक्त नहीं हैं
- मृदा पीएच: 5.5 -8.0 इष्टतम पाया गया। (6.5 से 7.5 पीएच के साथ अच्छा प्रदर्शन)

प्रोपेगेशन

- चूसने वालों या राइजोम या ऊतक संस्कृति पौधों के माध्यम से।
- भारत में 30% किसानों ने केले चूसने वालों के तेजी से गुणा करने के लिए सूक्ष्म प्रचार तकनीकों को अपनाया।
- विशेष रूप से ग्रैंड नाइन (भारत में लोकप्रिय ऊतक संस्कृति विविधता) किस्म किसानों द्वारा पसंद की जाती है, पौधों को रोपण के लिए 5 से 6 पत्तियों के साथ।

रोपण सामग्री

चूसनेवाले: केला दो प्रकार के चूसने वाले (केले के पौधे के गुणा के लिए चूसने वालों का उपयोग करने वाले 70% किसान) का उत्पादन करता है।

1. तलवार चूसने वाले: अच्छी तरह से विकसित राइजोम, पत्तियों की तरह तलवार, और ज्यादातर किसानों द्वारा पसंद किया जाता है। तलवार चूसने वाले - अधिक जोरदार, तेजी से बढ़ता है और जल्दी असर करने के लिए आता है।
2. पानी चूसने वाले: व्यापक पत्तियां, यह एक स्वस्थ केले के झुरमुट का उत्पादन नहीं करता है।
 - ऊतक संस्कृति के माध्यम से सूक्ष्म प्रचार - केले चूसने वालों का तेजी से गुणा।
 - चूसने वाले का औसत वजन - 1.5 से 2 किलो।

रोपण का मौसम

1. भूमि के अनुसार



कानून भूमि	फरवरी-अप्रैल- पूवन, रसथली, माहेन अप्रैल- नृसिंह, रोबस्टा
गार्डन लैंड	जनवरी - फरवरी और नवंबर - दिसंबर
पहाड़ी केला	जून - अगस्त (सिरुमलाई)

2. राज्य के अनुसार

राज्य	रोपण का समय
महाराष्ट्र	खरीफ - जून - जुलाई रबी - अक्टूबर - नवंबर(केनरा बैंक 2009)
तमिलनाडु	फरवरी - अप्रैल नवंबर - दिसंबर
केरल	रेनफेड- अप्रैल-मई सिंचित फसल- अगस्त- सितंबर

मौसम के आधार पर अंतर

बघारना	रिक्ति
खरीफ़	1.5 x 1.5 मीटर, 2 x 2 मीटर या 2.5 x 2.5 मीटर
रबी	1.5 x 1.2 मीटर, 1.5 x 1.37 मीटर।

रिक्ति

- पारंपरिक अंतर 1.5x1.5 है।
- 5-7°C तक तापमान के मामले में, रोपण की दूरी 2.1 मीटर x 1.5 मीटर से कम नहीं होनी चाहिए।

विभिन्न रोपण प्रणाली के तहत पौधों की आबादी

	रोपण की विधि	अंतर (एम)	पौधों की आबादी/हा
1	पारंपरिक रोपण		
क)	बौना कैवेंडिश	1.5x1.5	4444
ख)	रोबस्टा और नृसिंह	1.8x1.8	3086
ग)	रस्ताली, पूवन, करपुरावल्ली, मथान	2.1x2.1	2267

2.	उच्च घनत्व रोपण		
क)	युग्मित पंक्ति रोपण प्रणाली		
	i) बौना कैवेंडिश	1.2x1.2x2.0	5200
	ii) रोबस्टा, ग्रैंड नैन, पूवन, रस्थली और नेई पूवन	1.5x1.5x2.0	3800
ख)	3 चूसने वाला/पहाड़ी (रोबस्टा, Nendran)	1.8x3.6	4500

पौधरोपण विधि

गड्डे विधि -0.5 मीटर x0.5 मीटर x0.5 मीटर के गड्डे वांछनीय गहराई के लिए राइजोम रोपण के लिए खोदे जाते हैं।

गुजरात और महाराष्ट्र में रोपण का अभ्यास किया जाता है।

ट्रेंच रोपण - तमिलनाडु में अभ्यास किया जाता है।

ड्रिप सिंचाई खुराक

समय	कूड़े/पौधे/दिन
चौथा महीना	15 एल
5 महीना	20 एल
कटाई से पहले 15 दिन के लिए शूटिंग	25 एल

ड्रिप सिंचाई का लाभ

- गुच्छा पहले 30-45 दिनों के लिए परिपक्व हो गया।
- 15 से 30% तक उपज बढ़ाएं।
- 58-60% पानी बच जाता है।

विशेष प्रथाएं

- **थ्रसिंग:** पौधे के पुराने, सूखे और रोगग्रस्त हिस्सों को हटाना।
- **Dehandling:** यह गुच्छा की झूठी उंगलियों को हटा रहा है - एक गुच्छा जो गुणवत्ता उपज के लिए फिट नहीं हैं में कुछ अधूरे हाथ खेलने के बाद जल्द ही हटा दिया जाना चाहिए।
- **डेनवेलिंग:** मादा चरण के पूरा होने के बाद नर कली को हटाना।
- **डेसकरिंग:** केले के पौधे से अधिशेष और अवांछित चूसने वालों को हटाना।
desuckering के दो तरीके: मिट्टी के तेल का डालने का कार्य और लोहदंड, 2,4-डी के साथ हानिकारक।
- **मटोकिंग:** समर्थन + Desuckuring एक साथ किया।
- **प्रोपिंग:** स्प्रूडोस्टेम को गुच्छा उद्भव के समय समर्थन की आवश्यकता होती है।

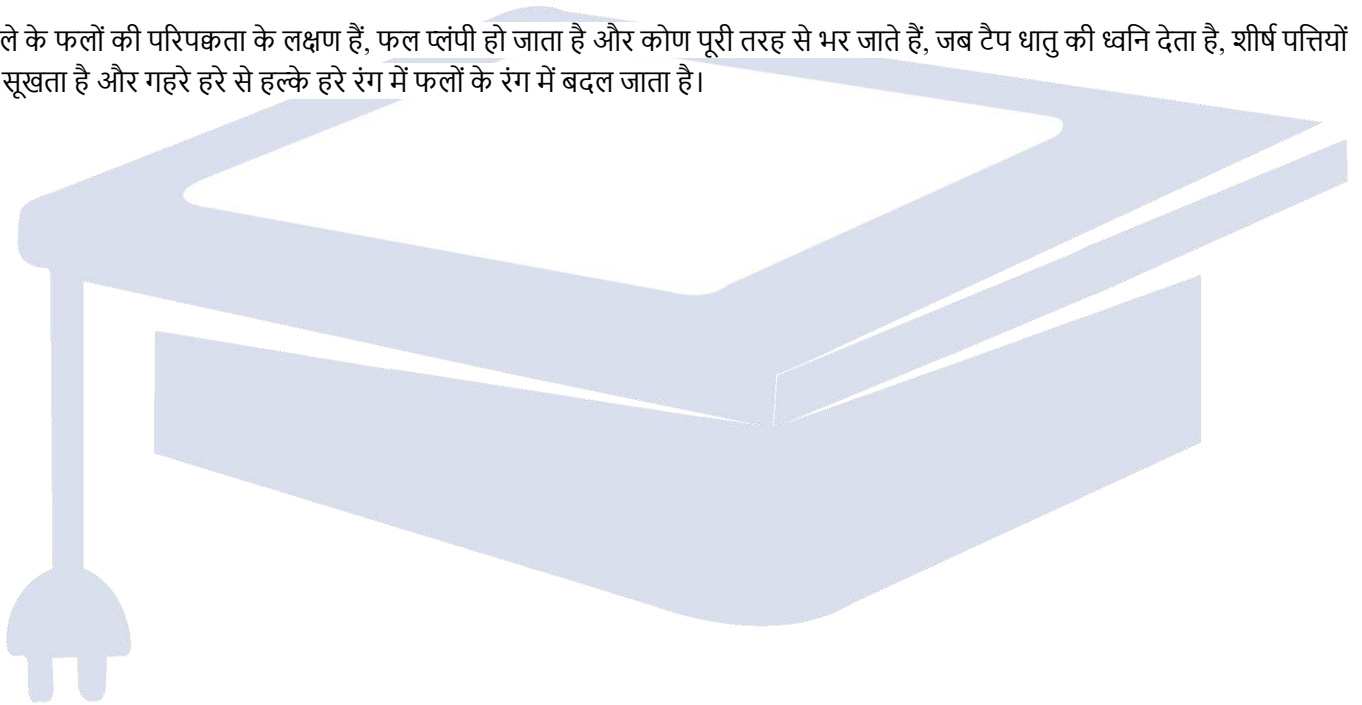


- **गुच्छा कवर/sleeving:** सूखे पत्तों या छिद्रित पॉलीथिन शीट के साथ गुच्छों को कवर करने से फलों की गुणवत्ता में वृद्धि होती है। गुच्छा कवर आकर्षक फलों के लिए बौना कैवेंडिश और सिल्क समूह में आवश्यक अभ्यास है।
- **डेसकरिंग** साल में 3 बार किया जाता है।
- **गुच्छा पतला:** एक से दो छोटे नीचे हाथ गुच्छा से हटा दिया जाना चाहिए ताकि एक समान गुच्छा विकास की सुविधा के लिए। केवल 7 से 8 हाथ रखें

संचयन:

केले की कटाई बौने में लगाने के 12 से 15 महीने बाद और लंबी किस्मों में लगाने के बाद 15 से 18 महीने की जाती है।

केले के फलों की परिपक्वता के लक्षण हैं, फल प्लंपी हो जाता है और कोण पूरी तरह से भर जाते हैं, जब टैप धातु की ध्वनि देता है, शीर्ष पत्तियों से सूखता है और गहरे हरे से हल्के हरे रंग में फलों के रंग में बदल जाता है।



LEARNIZY